संख्या के आधार पर समाचार–पत्रों में साहित्य–सामग्री का स्थान

Shiksha Kaushik[1] Dr. Ishwar Singh[2]

[1]Research Scholar, CMJ University, Meghalaya

[2]Rtd. Associate Professor, Govt. P.G. College, Narnaul

----------♦----------

परिचय

साहित्य और समाज का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है।[1] साहित्य मानव जीवन की अभिव्यक्ति है[2] और समाज का अस्तित्व मानव जीवन से है।[3] सभ्यता के विकास से प्रत्येक व्यक्ति समाज का अंग बन गया है। यही कारण है कि साहित्य में भी वैयक्तिक जीवन के साथ–साथ सामाजिक जीवन का समावेश हो गया है। साहित्य और समाज एक–दूसरे से प्रभावित होते रहे हैं तथा किसी सीमा तक एक दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं।[4] किसी भी साहित्य के अध्ययन से उसके निर्माण कालीन समाज का ज्ञान होता है। हिन्दी–साहित्य का इतिहास भी अपने काल के अनुसार राजनीतिक, सामाजिक परिस्थितियों की ओंर संकेत करता है।[5] आदिकाल में राजाओं की युद्धप्रियता, भक्तिकाल में निराश समाज द्वारा ईश्वर का आश्रय, रीतिकाल में श्रृंगार की प्रधानता व आधुनिक काल में सामाजिक विसंगतियों के साथ देश–भक्ति को सहज ही देखा जा सकता है।[6]

साहित्य समाज को दर्पण दिखलाने के साथ–साथ उसका मार्ग–दर्शन भी करता रहा है। एक ओर तो वह यथार्थ के माध्यम से सामाजिक अव्यवस्था को समाज के समक्ष रखता है तथा दूसरी ओर आदर्श के माध्यम से उस अव्यवस्था को दूर करने के उपाय भी सुझाता रहा है। आज राजनेताओं ने, वैज्ञानिकों ने जिस हृदयहीन समाज का निर्माण किया है, उसे आदर्श रूप देने के लिए साहित्यकारों का दायित्व सर्वाधिक है।[7] साहित्यकार ही निर्दय राजनीति और विनाशकारी विज्ञान में मानवता की स्थापना कर सकता है। वही मानव में उन प्रवृतियों का अंकुरण कर सकता है, जिनके आधार पर आज तक मानव जाति जीवित एवं विकसित होती आई है।

साहित्य का अवलोकन

दूरदर्शन व आकाशवाणी समाचारों को भी इसका पूर्ण विकल्प नहीं माना जा सकता है।[8] समाचार–पत्र आज दैनिक जीवन का अपरिहार्य अंग बन गया है।[9]

समाचार–पत्र वर्तमान युग का दर्पण है।, जन जागरण का सर्वप्रिय, सस्ता और सुलभ साधन है। सभ्य समाज के लिए मानसिक अल्पाहार है। पत्रकारिता का सबसे प्रमुख अंग समाचार–पत्र है। समाचार–पत्रों के माध्यम से ही नित्य नूतन दैनिक घटनाएं तथा प्रसंग हमारे समक्ष प्रस्तुत हो सकते हैं। समाज अथवा राष्ट्र पत्रकारिता के माध्यम से ही अभिव्यक्ति पाता है। चाहे वह राजनीतिक परिवर्तन हो, सामाजिक विसंगति अथवा साहित्यिक गतिविधि। पत्रकारिता प्रत्यक्ष रूप से जन जीवन से जुड़ी हुई है। जनसमस्याओं को उजागर करके उन्हे शासन तक पंहुचाने के लिए पत्रकारिता से सशक्त माध्यम ओर कोई नहीं है। यह जनता और सरकार के मध्य सेतु का कार्य करती है। इसी कारण पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तम्भ कहा जाता है।[10] न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका और प्रैस के बिना लोकतंत्र निरर्थक है। पत्रकारिता के माध्यम से समाज को एक दिशा प्राप्त होती है। वास्तव में पत्रकारिता मानव जागरण की देन है।

सन् 1826 ई. से 1900 ई. तक की अवधि में हिन्दी पत्रकारिता ने अनेक आरोह–अवरोह देखे हैं। ''उदन्त मार्तण्ड'' से ''सरस्वती'' तक की यात्रा में अनेक आयाम आए हैं। समय के साथ–साथ पत्रकारिता अपने वर्तमान स्वरूप को प्राप्त हुई है। पत्रकारिता के इतिहास से पूर्व उसके अर्थ व स्वरूप का पुनर्विलोकन करना आवश्यक है। पत्रकारिता शब्द अंग्रेजी के जर्नलिज्म का पर्याय है। जर्नलिज्म फ्रेंच शब्द जर्नी से उत्पन्न है, जिसका अर्थ है एक दिवस का कार्य तथा इसकी विवरणिका प्रस्तुत करना (अमेरिकन एनसाईक्लोपीड़िया)। जर्नलिज्म शब्द "जर्नल" से भी निकला हुआ है, जिसका शाब्दिक अर्थ है दैनिक। (चेम्बर्स और न्यू बेन्सटर्स डिक्शनरी)।

विद्वानों की परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि पत्रकारिता अन्याय के खिलाफ जंग छेड़ने का घातक हथियार है, दायित्व बोध बढ़ाने का साधन है, लोक चेतना को जागृत करने का माध्यम है तथा साथ ही एक व्यवसाय भी है। पत्रकारिता का कार्य जोखिम भरा तथा तलवार पर चलने के समान है। मूलतः पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य सत्य की खोज तथा सत्य की स्थापना है। सामान्य जनता तक समाचार पंहुचाने में पत्रकारिता का कार्य एक संस्था के समान है। समाज के परिवर्तित रूप में भी पत्रकारिता के योगदान को

नकारा नहीं जा सकता। पत्रकारिता सर्वव्यापी है तथा सामयिकता की साधना है। पत्रकारिता का कार्य व्यक्तिनिष्ठ न होकर समाजनिष्ठ है। पत्रकार भविष्यदृष्टा भी होता है और जनता की अनुभूतियों से व उसकी आत्मा से साक्षात्कार करता है। पत्रकारिता क्रांति की लपटों में समाज की बुराईयों को खत्म करने का आयोजन है।

कार्य शैलि तथा सामग्री

प्रस्तुत पत्र में समाचार–पत्रों में प्रकाशित साहित्य का अंतर्वस्तु विश्लेशण कर तथ्यों को प्रस्तुत किया गया है। शोध हेतु छः राष्ट्रीय दैनिक हिन्दी समाचार–पत्रों के कुल 402 अंको का चयन किया गया है। जिसमें दैनिक भास्कर, दैनिक जागरण, दैनिक ट्रिब्यून, नवभारत टाइम्स व जनसत्ता को शामिल किया गया है। शोध का आधार, सामग्री का अनुपात, स्थान का अनुपात, साहित्य का उद्देश्य, विधा, तत्व, भाशा, स्वरूप, विशय, वाक्य संरचना तथा भौली को रखा गया। समाचार–पत्रों में साहित्यिक समाचारों की संख्या व स्थान पर भी विचार किया गया।

सारणी 1 – संख्या के आधार पर समाचार–पत्रों में साहित्य–सामग्री का स्थान

समाचार–पत्र	कुल स्थान (से.मी.)	साहित्य–सामग्री स्थान (से.मी.)
दैनिक भास्कर	305856	5153
दैनिक ट्रिब्यून	344680	5657
अमर उजाला	393128	5707
जनसत्ता	273672	2474
दैनिक जागरण	350992	1834
नवभारत टाइम्स	328640	1412

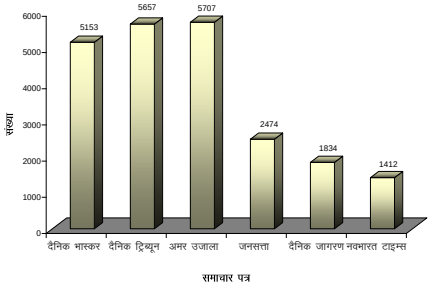

प्रस्तुत सारणी में समाचार–पत्रों में साहित्य–सामग्री को दिये गए स्थान से सम्बन्धित तथ्यों को दर्शाया गया है। जिसके अनुसार दैनिक भास्कर में कुल 305856 सें.मी. स्थान में से साहित्य को 5153 सें.मी. स्थान दिया गया। इसी क्रम में दैनिक ट्रिब्यून ने 344680 से.मी. में से साहित्य को 5657 से.मी. का स्थान दिया। अमर उजाला में 393128 सें.मी. में से 5707 सें.मी. का स्थान साहित्य के लिए प्राप्त हुआ। जनसत्ता में 273672 से.मी. में से साहित्य को 2474 से.मी. का स्थान मिला। दैनिक जागरण में 350992 से.मी. में से साहित्य को 1834 सें. मी. का स्थान दिया। इसी प्रकार नवभारत टाइम्स द्वारा कुल प्रकाशित स्थान 328640 से.मी. में से 1412 से.मी. का स्थान साहित्य हेतु दिया गया। सारणी से स्पष्ट है कि साहित्य हेतु सर्वाधिक स्थान (5707 से. मी.) अमर उजाला द्वारा दिया गया। जबकि नवभारत टाइम्स ने साहित्य को न्यूनतम (1412 से.मी.) स्थान दिया है।

सारणी 2 – प्रतिशत के आधार पर समाचार–पत्रों में साहित्य–सामग्री का स्थान

समाचार–पत्र	कुल स्थान (से.मी.)	साहित्य–सामग्री स्थान (से.मी.)	प्रतिशत
दैनिक भास्कर	305856	5153	1.68
दैनिक ट्रिब्यून	344680	5657	1.64
अमर उजाला	393128	5707	1.45
जनसत्ता	273672	2474	0.90
दैनिक जागरण	350992	1834	0.52
नवभारत टाइम्स	328640	1412	0.43

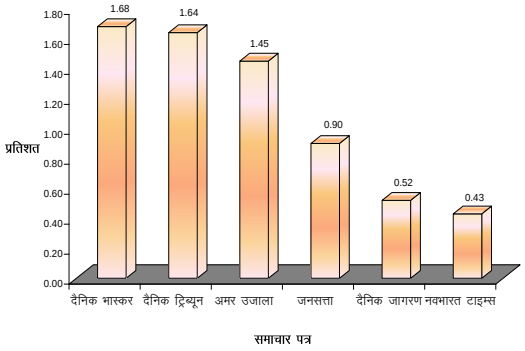

प्रस्तुत तालिका में साहित्यिक सामग्री के स्थान का विश्लेशण प्रस्तुत है। जिसके अन्तर्गत दैनिक भास्कर की कुल प्रकाि ात साहित्यिक सामग्री 1.68 प्रतिशत, दैनिक जागरण की 0.52 प्रतिशत, दैनिक ट्रिब्यून की 1.64 प्रतिशत, अमर उजाला की 1.45 प्रतिशत, नवभारत टाइम्स की 0.43 प्रतिशत एवं जनसत्ता की कुल प्रकाशित साहित्यिक सामग्री मात्र 0.90 प्रतिशत है। प्रस्तुत सारणी से यह स्पश्ट होता है कि दैनिक भास्कर साहित्य–सामग्री प्रकाशन हेतु अन्य समाचार–पत्रों की तुलना में अधिकतम (1.68 प्रतिशत) स्थान देकर प्रथम स्थान पर है, इसी प्रकार दैनिक टिब्यून 1.65 प्रतिशत के साथ दैनिक भास्कर के समकक्ष है। किन्तु नवभारत टाईम्स साहित्य ऐसा समाचार–पत्र है जो साहित्य हेतु न्यूनतम स्थान (0.43 प्रतिशत) देता है।

सारणी 3 – संख्या के आधार पर समाचार–पत्रों में प्रकाि ात साहित्य–सामग्री

समाचार–पत्र	कुल विशय सामग्री संख्या	साहित्य–सामग्री संख्या
दैनिक भास्कर	10477	125
दैनिक ट्रिब्यून	16032	173
अमर उजाला	16199	161
जनसत्ता	8565	70
दैनिक जागरण	11498	68
नवभारत टाइम्स	12010	49

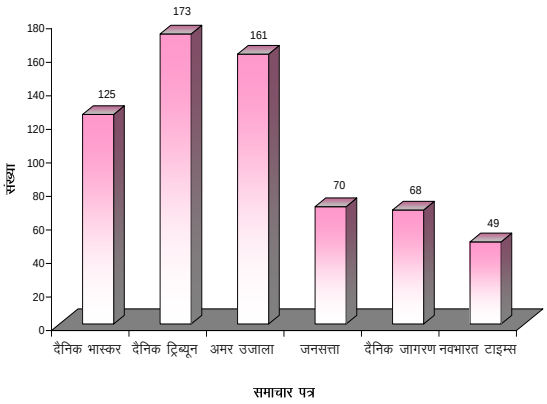

प्रस्तुत तालिका के अनुसार दैनिक भास्कर में प्रकाि ात कुल विषय–सामग्री 10477 में से 125 की संख्या में साहित्यिक–सामग्री है, दैनिक ट्रिब्यून में कुल 16032 विषय–सामग्री में से 173 की संख्या में साहित्य–सामग्री का प्रकाशन हुआ। अमर उजाला मे 16199 में से 161 साहित्य–सामग्री है। जनसत्ता में कुल 8565 विषय–सामग्री में से 70 की संख्या में साहित्य प्रकाशित हुआ है। दैनिक जागरण में कुल 11498 में से 68 की संख्या में साहित्य प्राप्त हुआ है तथा नव भारत टाइम्स में कुल प्रकाशित 12010 विषय–सामग्री में से मात्र 49 की संख्या में साहित्य–सामग्री प्रकाशित हुई है। सारणी संकेत देती है कि दैनिक ट्रिब्यून द्वारा सबसे अधिक संख्या (173) में साहित्य–सामग्री का प्रकाशन किया गया जबकि नवभारत टाईम्स में साहित्य सबसे कम (49) संख्या में है।

सारणी 4 – प्रतिशत के आधार पर समाचार–पत्रों में प्रकाि ात साहित्य–सामग्री

समाचार–पत्र	कुल विशय सामग्री संख्या	साहित्य–सामग्री संख्या	साहित्य–सामग्री प्रतिशत
दैनिक भास्कर	10477	125	1.19
दैनिक ट्रिब्यून	16032	173	1.07
अमर उजाला	16199	161	1.00
जनसत्ता	8565	70	0.81
दैनिक जागरण	11498	68	0.59
नवभारत टाइम्स	12010	49	0.4

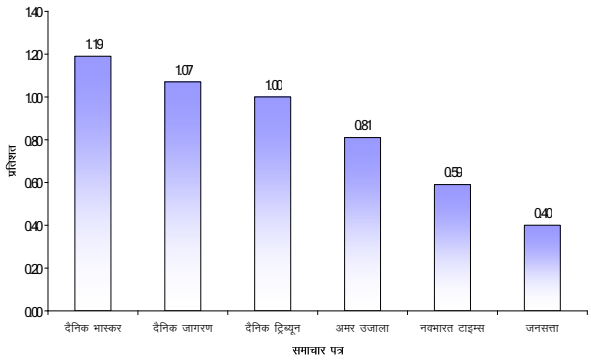

विश्लेशण

प्रस्तुत तालिका के अनुसार भोध में विश्लेषण का दूसरा आधार रहा कुल विशय सामग्री संख्या एवं साहित्यिक सामग्री संख्या का अनुपात। इस संदर्भ में दैनिक भास्कर में प्रकाि ात साहित्य–सामग्री की संख्या कुल सामग्री की मात्र 1.19 प्रति ात है, जबकि दैनिक जागरण की 0. 59 प्रति ात, दैनिक ट्रिब्यून में यह 1.7 प्रति ात, अमर उजाला मे 1 प्रति ात, नवभारत टाइम्स में 0.4 प्रति ात व जनसत्ता में साहित्य–सामग्री का प्रति ात मात्र 0.81 प्रति ात है। सारणी के अनुसार दैनिक भास्कर में साहित्य प्रकाशन सर्वाधिक (1.19 प्रतिशत) हुआ है तथा जबकि नवभारत टाइम्स में साहित्य प्रतिशत न्यूनतम (0.4 प्रतिशत) है।

संदर्भ ग्रंथ

1. तिवारी रामचन्द्र, पत्रकारिता के विविध रूप, आलेख प्रकाशन, दिल्ली, 1980।

2. कुमार जोगेन्द्र, हिन्दी पत्रकारिता की दिशाएं, सुरेन्द्र कुमार एण्ड सन्स, शाहदरा, दिल्ली, 2004।

3. गोदरे विनोद, हिन्दी पत्रकारिता : स्वरूप और संदर्भ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

4. डॉ. ठाकुर दत्त शर्मा आलोक, हिन्दी पत्रकारिता एवं जनसंचार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2000।

5. पंकज विष्णु, हिन्दी पत्रकारिता का सुबोध इतिहास, रचना प्रकाशन, दिल्ली, 2002।

6. डॉ. माणिक, समाचार–पत्रों की भाषा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1999।

7. पारिख जावरी मल्ल, जनसंचार के सामाजिक संदर्भ, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली, 2001।

8. पंतजलि प्रेमचन्द, मीडिया के पचास वर्ष, राधा पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 1997।

9. डॉ. नगेन्द्र, विचार और विश्लेषण, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।

10. डॉ. हंस कृष्ण लाल, समीक्षा शास्त्र, ग्रंथम राम बाग, कानपुर।

11. डॉ. द्विवेवी सूर्य नारायण, भारतीय समीक्षा सिद्धान्त, संजय बुक सेंटर, वाराणसी।

12. राय गुलाब, साहित्य और समीक्षा, प्रतिभा प्रकाशन मंदिर, दिल्ली।

13. राय गुलाब, साहित्य और समीक्षा, साहित्य रत्न भण्डार, आगरा।

14. चौहान शिवदान सिंह, साहित्यानुशीलन, आत्माराम एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, 1955।

15. डॉ. दीक्षित भागीरथ, समीक्षा लोक, इन्द्रप्रस्थ प्रकाशन, दिल्ली।

16. डॉ. शर्मा ओमप्रकाश, आलोचना के सिद्धान्त, पदम बुक कम्पनी, जयपुर।

17. रजवार इन्द्र चन्द्र, पत्रकारिता : सिद्धान्त और व्यवहार, जनाप्रकाशन, दिल्ली।

18. किशोर राज, पत्रकारिता के नये परिप्रेक्ष्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

19. पंत नवीन चन्द्र, पत्रकारिता के मूल सिद्धान्त, कनिष्का पब्लिशर्ज, दिल्ली।

20. डॉ. हरिमोहन, समाचार फीचर लेखन और सम्पादन कला, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली।

21. गोस्वामी प्रेम चन्द, पत्रकारिता के प्रतिमान, यूनिक ट्रेडर्स, जयपुर।

22. पंत एन.सी., जोशी मनोज, कुमार जितेन्द्र, हिन्दी पत्रकारिता की रूपरेखा, कनिष्का पब्लिशर्ज, नई दिल्ली, 1995।

23. पंत एन.सी., संपादन कला, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

24. तिवारी अर्जुन, हिन्दी पत्रकारिता और भावनात्मक एकता, नमन प्रकाशन नई दिल्ली, 1999।

25. तिवारी नित्यानन्द, आधुनिक साहित्य और इतिहास बोध, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

26. कुमार जैनेन्द्र, साहित्य और संस्कृति, पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली।

27. डॉ. त्रिवेदी आर.एन., डॉ. शुक्ला आर.पी., रिसर्च मैथ्डोलॉजी, कालेज बुक डिपो, दिल्ली।

28. डॉ. रामअवतार, हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली।

29. मिश्र कृष्ण बिहारी, हिन्दी पत्रकारिता, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1968।

30. डॉ. राघवन वी., भारतीय काव्य सिद्धान्त, प्रकाशन, ईलाहाबाद।

31. टेकचन्द, खन्ना वेदपाल, आदर्शालोचन, राज पब्लिशर्ज, नई सड़क, नई दिल्ली, 1960।

32. दास श्यामसुन्दर, साहित्योलोचन, इंडियन प्रैस लिमिटेड, प्रयाग, 1942।

33. हिन्दी पत्रकारिता और साहित्य